बिहार में नाट्यकला

महिमा खोते जा रहे मुगलकालीन प्रशासन के अंतिम समय में कलाओं को विलासिता तथा व्यवसाय का साधन बना लिया गया था। नाटक के क्षेत्र में न कोई गंभीर लेखन हो रहा था और न ही मंचन। पारसी थिएटर कंपनियों तथा भाँडों की मंडलियों ने रंगमंच को सभ्य लोगों के लिए वर्जित प्रदेश बना रखा था। उनकी मंचीय प्रस्तुतियों में भावुकतापूर्ण या उत्तेजनापूर्ण नाटक के अभिनय के साथ नर्तकियों के नृत्य, साजबाज और अश्लील हास्य-प्रस्तुतियों का अनिवार्य योग हुआ करता था। उनका उद्देश्य मात्र मनोरंजन का व्यवसाय कर पैसा कमाना हुआ करता था। कहा जा सकता है कि वे सस्ते मनोरंजन के विक्रेता थे। बिहार में विक्टोरिया नाटक मंडली, एलिफिंसटन नाटक मंडली और कर्जन थिएटर नामक पारसी थिएटर खूब लोकप्रिय हुए थे।

पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा
'मनोरंजन नाटक मंडली' (आरा) के संस्थापक

'बिहार बंधु' नामक पत्रिका के संपादक केशवराम भट्ट उन थिएटर कंपनियों से प्रभावित भी हुए थे और उनकी व्यावसायिकता तथा स्तरहीनता की आलोचना भी किया करते थे। अंततः 1876 ई० में उन्होंने 'पटना नाटक मंडली' नामक नाट्य संस्था की स्थापना की। उस संस्था से ही बिहार में साहित्यिक-सामाजिक

गंभीरता वाले सोद्देश्य रंगमंच का प्रारंभ होता है। भट्टजी स्वयं नाटक लिखते भी थे। आरा के पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा ने 1914 ई० में 'मनोरंजन नाटक मंडली' नामक नाट्य संस्था स्थापित की थी और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के 'सत्य हरिश्चन्द्र' का सफल मंचन किया था। उसके पूर्व बी० एन० कॉलेज, पटना के छात्रों ने कॉलेज परिसर में ही सन् 1901 ई० में शेक्सपियर (अंग्रेजी का महान नाटककार) के नाटकों के अनेक शौकिया अव्यावसायिक मंचन किये थे। अव्यावसायिक नाटकों के मंचन की टूटती-बनती धारा की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी देव के महाराजा जगन्नाथ प्रसाद सिंह 'किंकर' द्वारा स्थापित 'किंकर नाट्य कला मंच' (1917 ई०) भी था। किंकर जी चित्रकार, कवि और नाटक लेखक तो थे ही, उनमें अभिनय तथा निर्देशन की भी भरपूर क्षमता थी। उन्होंने अपने किले के अंदर ही नाट्य प्रस्तुतियों के लिए मंच तथा एक बड़ा पूर्वाभ्यास कक्ष भी बनवाया था। बार-बार के दृश्य परिवर्तन की असुविधा से मुक्ति के लिए उन्होंने घुमावदार मंच बनवाया था। उस संस्था का नाम बाद में उन्होंने 'महालक्ष्मी थिएटर' कर दिया था। महालक्ष्मी थिएटर के मंच पर ही किंकर जी ने स्वरचित नाटक 'पुनर्जन्म' का मंचन अपने ही निर्देशन में किया था। बाद में वे फिल्म निर्माण की ओर मुड़ गये और 'पुनर्जन्म' पर ही बिहार की पहली हिन्दी फिल्म बनायी। किंकर जी बाँग्ला रंगमंच से गहरे प्रभावित थे।

प्यारेमोहन सहाय
'कला संगम' (पटना) के संस्थापक

बिहार में अव्यावसायिक सोद्देश्य नाटकों तथा उनके मंचन के एक नये युग का अखंड क्रम बीसवीं शताब्दी के पाँचवें दशक में प्रारंभ होता है। डा० एस० एम० घोषाल,

डा० ए० के० सेन और व्रजकिशोर प्रसाद ने 1947 ई० में 'पटना इप्टा' की स्थापना की। उसी आसपास में पटना में अनिल मुखर्जी ने 'बिहार आर्ट थिएटर' नामक संस्था स्थापित की। उन्होंने ही गाँधी मैदान के पूर्व में स्थित 'कालिदास रंगालय' नामक प्रेक्षागृह का निर्माण कराया था। संस्कृति तथा कला से संबंधित प्रस्तुतियों के लिए कालिदास रंगालय सर्वसुलभ प्रेक्षागृह है। उस काल में पटना रंगमंच की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण हस्ती फल्गु घटक भी हुआ करते थे। पटना सिटी वासी पं० जगन्नाथ शुक्ल ने भी बिहार में नाटक और रंगमंच के विकास में प्रारंभिक योग दिया था। लेकिन बख्तियारपुर से अपनी रंगयात्रा का प्रारंभ करने वाले चतुर्भुज जी के एकल व्यक्तित्व ने जितने गहरे तक हिन्दी रंगमंच को प्रभावित किया उतना उनके समकालीन अन्य किसी से संभव नहीं हो सका। बख्तियारपुर में ही चतुर्भुज जी की एक नाटकीय प्रस्तुति देखकर स्व० पृथ्वीराज कपूर ने उनकी प्रस्तुति तथा अनेक अभिनेताओं की खुली प्रशंसा की थी। चतुर्भुज जी के लिखे अनेक नाटकों ने बिहार के गाँवों के शौकिया नाटककारों में भी अभूतपूर्व लोकप्रियता पायी थी। तब बिहार के गाँवों में 'सत्य हरिश्चन्द्र' के बाद सबसे ज्यादा मंचन चतुर्भुज जी के ही नाटकों के हुआ करते थे। राष्ट्रीयता, सामाजिक विषमता का विरोध, नारी जागरण आदि तत्कालीन विषय हुआ करते थे। रंगमंच पर प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से अत्यंत कठिन माने जाने वाले जयशंकर प्रसाद के 'चंद्रगुप्त' नाटक का भी चतुर्भुज जी ने सफल मंचन

चतुर्भुज जी
'बहादुरशाह' नाटक में निकोल्सन के चरित्र में

किया था। चतुर्भुज जी की नाट्य संस्था का नाम था 'मगध कलाकार'।

इप्टा की प्रस्तुतियों में सामाजिक विषमता तथा उत्पीड़नों को रेखांकित करने की परंपरा प्रारंभ हुई जिसने आगे चलकर बिहार के रंगकर्म को एक स्वतंत्र पहचान दी। बजरंग वर्मा, श्याम सागर, ललित किशोर सिन्हा, परवेज अख्तर, तनवीर अख्तर, जावेद अख्तर, विनीत सिन्हा, रश्मि सिन्हा, श्रीकांत किशोर आदि अभिनेताओं, निर्देशकों, लेखकों ने 'पटना इप्टा' को भरपूर गतिशीलता दी थी। 'हानूष', 'कबिरा खड़ा बाजार में', 'माधवी', 'महाभोज', 'दूर देश की कथा', 'मुक्ति पर्व' आदि पटना इप्टा की प्रस्तुतियों ने राष्ट्रव्यापी प्रशंसा पाई थी। तब कला संगम नामक नाट्य संस्था के माध्यम से प्यारेमोहन सहाय तथा सतीश आनंद ने निर्देशन तथा अभिनय दोनों क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्तर की पहचान कायम कर ली थी। बिहार के बाहर इन दो नाट्य कलाकारों ने जितनी प्रतिष्ठा पाई उतनी अन्य कोई नहीं पा सका।

चतुर्भुज जी ने अपनी रंग सक्रियता का प्रारंभ बख्तियारपुर में जिस संस्था की स्थापना के साथ किया था उसका नाम 'बिहारी क्लब' था। बाद में 1952 ई० में उन्होंने 'मगध कलाकार' की स्थापना की। चतुर्भुज जी का सबसे बड़ा योगदान यह रहा कि रंगमंच की दृष्टि से उन्होंने अनेक

नूर फातिमा (बायें)
(चतुर्भुज जी के नाटक 'शकुंतला' के एक दृश्य में)

नाटक लिखे, जिनका मंचन उन्होंने स्वयं तो किया ही, अन्य संस्थाओं द्वारा भी उनके मंचन अनगिनत बार हुए और सराहे गये। 'कलिंग विजय', 'अरावली का शेर', 'मेघनाद', 'कर्ण', 'जालियाँवाला बाग', 'कुँवर सिंह', 'झाँसी की रानी', 'सिराजुद्दौला' आदि नाटकों जैसी व्यापक लोकस्वीकृति जावेद अख्तर खाँ की 'दूर देश की कथा' तथा श्रीकांत किशोर की 'अरण्य कथा' को नहीं मिल सकी। कहा जा सकता है कि चतुर्भुज जी, प्यारेमोहर सहाय और सतीश आनंद ये तीनों बिहारी हिन्दी रंगमंच को गगनचुंबी ऊँचाई देने वाली त्रयी का निर्माण करते हैं।

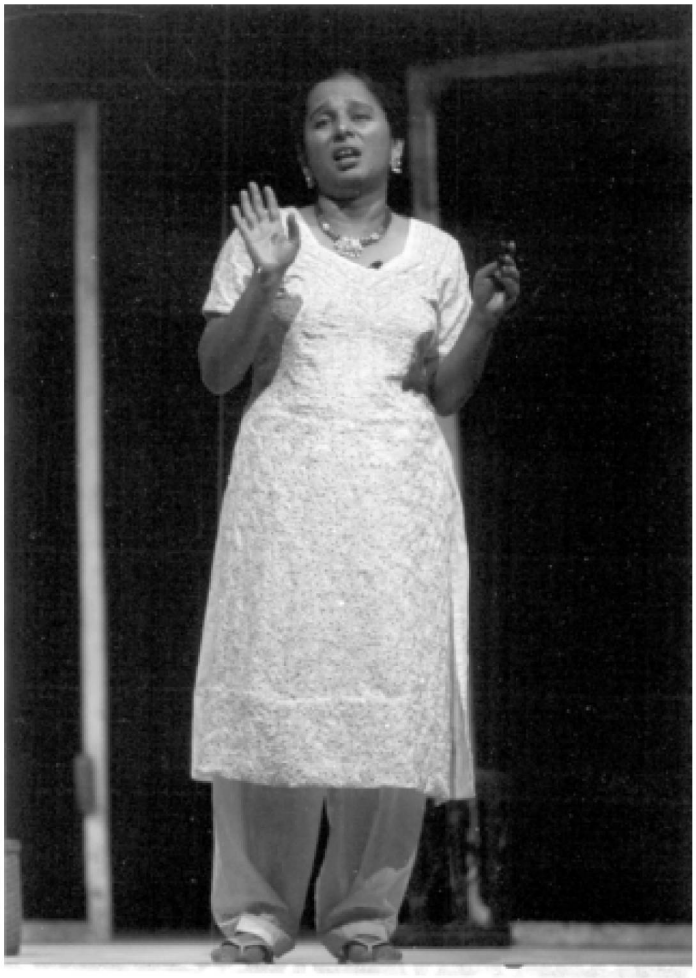

मोना झा
'नरमेघ' के एक दृश्य में

प्यारेमोहन सहाय राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले बिहार के प्रथम व्यक्ति बने। उन्होंने पटना में 'कला संगम' की स्थापना की और उन्हें सतीश आनन्द जैसे सक्षम- समर्पित कलाकार की संगति प्राप्त हुई। इस तरह 'मगध कलाकार' तथा 'इप्टा' द्वारा प्रारंभ की गई परंपरा को 'कला संगम' के माध्यम से उन्होंने आधुनिकता के अनेक नये आयामों से परिचित कराया। सतीश आनन्द ने बिहार की लोकशैलियों से हिन्दी नाटकों को जोड़ा। जिनमें 'विदेसिया' के उनके प्रस्तुतीकरण की सर्वाधिक चर्चा हुई। उनके द्वारा प्रारंभ किये गये प्रयोगों को निर्माण कला मंच के संजय उपाध्याय ने भरपूर प्रतिष्ठा दिलाई। सतीश आनन्द की प्रतिभा अभिनय तथा निर्देशन

के साथ ही अनुवाद के क्षेत्र में भी बिहार में अद्वितीय रही है। उन्होंने देश-विदेश की अन्य अनेक महान कृतियों के अलावा 'गोदान' तथा 'मैला आँचल' के भी सफल मंचन प्रस्तुत किये थे।

बीसवीं शताब्दी के आठवें दशक में 'अनागत' नामक नाट्य संस्था की स्थापना हुई थी। 'गिनिपिग' जैसी कुछ महत्त्वपूर्ण प्रस्तुतियों के बाद वह संस्था टूट गई परंतु उसके संस्थापक नरेन्द्र नाथ पाण्डेय और परवेज अख्तर अभिनय तथा निर्देशन में लगातार ऊँचाइयाँ प्राप्त करते गये। पाण्डेय जी ने बाद में शोध तथा फिल्मों की ओर अपना रुख कर लिया जबकि परवेज अख्तर इप्टा से जुड़े और निर्देशन में एक के बाद एक मील के पत्थर गाड़ते गये। उनके द्वारा निर्देशित 'महाभोज', 'हानूष' 'माधवी', 'कबिरा खड़ा बाजार में', 'दूर देश की कथा', 'मुक्ति पर्व' तथा 'अरण्य कथा' के मंचनों को बिहार के रंगमंच की अनुपम उपलब्धियों के रूप में देखा जाता है। बिहार के रंगमंच पर निर्देशन के क्षेत्र में सतीश आनन्द, परवेज अख्तर तथा संजय उपाध्याय की एक आकर्षक त्रयी बनती है।

पटना इप्टा में परवेज अख्तर के साथ ही उनके दो अनुज तनवीर अख्तर तथा जावेद अख्तर भी एक ही समय में सक्रिय रहे। निर्देशन, अभिनय तथा लेखन तीनों पक्षों को इन तीन भाइयों ने जितनी पुष्टि दी थी वैसी फिर संभव नहीं हो सकी। जावेद अख्तर खाँ बिहार के उच्चतम दो-चार अभिनेताओं में से एक तो हैं ही 'दूर देश की कथा' जैसे प्रशंसित नाटक के लेखक भी हैं।

जावेद अख्तर
'नरमेघ' के एक दृश्य में

नाटक के लेखन में भी बिहार ने चतुर्भुज, जगदीश चन्द्र माथुर, रामवृक्ष बेनीपुरी, रामेश्वर सिंह काश्यप, सिद्धनाथ कुमार, अविनाश चन्द्र मिश्र और श्रीकांत किशोर को जन्म दिया है। इनमें चतुर्भुज जी, रामेश्वर सिंह काश्यप, अविनाशचंद्र मिश्र, जावेद अख्तर और श्रीकांत किशोर विशेष

उल्लेखनीय हो जाते हैं क्योंकि इन्होंने रंगमंच की दृष्टि से अपनी नाट्यकृतियों की रचना की है। रेडियो नाटक में रामेश्वर सिंह काश्यप के 'लोहा सिंह' ने जो इतिहास सातवें-आठवें दशक में रचा था वह शायद पूरे देश में अभूतपूर्व रहा है। पटना रेडियो के रेडियो नाटककारों में सिद्धनाथ कुमार भी उल्लेखनीय रहे हैं। प्रत्यक्ष रंगमंच पर भी काश्यप जी सक्रिय रहे थे और रंगमंच की दृष्टि से उनके दो नाटकों 'अपराजेय निराला' तथा 'समाधान' को महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

कथाकार हृषीकेश सुलभ की कहानी अमली का मंचीय प्रस्तुतीकरण सतीश आनंद ने किया था। उसे इतनी लोकप्रियता मिली कि अन्य शहरों में भी उसके दर्जनों मंचन हुए। 'अमली' के अलावा सुलभ जी की 'माटी गाड़ी', 'बटोही' और 'धरती आबा' नामक नाटय कृतियों ने भी बिहार के नाट्य वैभव को राष्ट्रव्यापी गौरव से विभूषित किया है। सुलभ जी ने फणीश्वरनाथ रेणु के प्रसिद्ध उपन्यास मैला आँचल का नाट्य रूपांतर भी किया था। अविनाश चंद्र मिश्र के 'मुक्तिपर्व', जावेद अख्तर खाँ के 'दूर देश की कथा' तथा श्रीकांत किशोर की 'अरण्यकथा' के मंचनों ने पूरे देश में बिहार के नाट्य चिंतन, निर्देशन तथा अभिनय की विशिष्टता प्रमाणित की थी।

परवेज अख्तर
प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक

बिहार के हिन्दी रंगमंच का विकास पटना के अलावा आरा, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, भागलपुर, पूर्णिया, टीकापट्टी, बख्तियारपुर, पंडारक आदि कस्बों-शहरों में भी भरपूर होता रहा है। नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुतियों में तो उन जगहों की संस्थाओं का योगदान कदाचित पटना से भी आगे रहा है।

बिहार में डोमकच और सामा-चकेवा जैसे पारंपरिक लोकनाट्य भी रहे हैं परंतु लोकनाट्य कला को सर्वाधिक योग भिखारी ठाकुर ने दिया। लंबे काल से, विशेषकर भोजपुर तथा छपरा में प्रचलित व्यावसायिक नाच पार्टियों की परंपरा में उन्होंने अपनी प्रतिभा तथा अनुभव से 'विदेसिया शैली' का विकास किया और उसके माध्यम से समाज की अनेक विषमताओं तथा पीड़ाओं को स्वर दिया। वे नाटक लिखते भी थे, अभिनय भी

करते थे और गाते भी थे। उनकी विदेसिया नाट्य शैली को हिन्दी में सतीश आनंद और संजय उपाध्याय ने विकसित किया है। हृषीकेश सुलभ के नाटक 'बटोही' (2006 ई०) में भिखारी ठाकुर के जीवन-संघर्ष तथा रचनात्मक विकास का आत्मीय तथा प्रभावकारी तटस्थता के साथ प्रस्तुतीकरण किया गया है। अविनाश चन्द्र मिश्र के 'मुक्तिपर्व' में मिथिला में प्रचलित एक लोकनाट्यकथा को ही आधार बनाया गया था।

पटना बिहार की राजनीतिक ही नहीं, सांस्कृतिक राजधानी भी रहा है। यहाँ दर्जनों नाट्य संस्थाएँ आज भी सक्रिय हैं। यहाँ कालिदास रंगालय, भारतीय नृत्य कला मंदिर और रवीन्द्र भवन जैसे प्रेक्षागृहों (हॉल) के अलावा भारतीय नृत्यकला मंदिर के मुक्ताकाश मंच की बिहार के नाट्य विकास में उल्लेखनीय सहभागिता रही है। अन्य क्षेत्रों में भी प्रेक्षागृह हैं परंतु सुदूर देहातों के वे मंचन एक अलग अनुभूति दे जाते हैं जहाँ मैदान में चौकियों का मंच बनता है, बाँस-बल्ले से परदे टाँगे जाते हैं और एक पेट्रोमेक्स की रोशनी में एक ही माइक के सहारे पूरा मंचन संपन्न हो जाता है। ऐसी ही व्यवस्था के सहारे भिखारी ठाकुर ने अपने मंचनों को विकसित किया था और उस व्यवस्था के सहारे ही हप्तों तक रामलीलाएँ चला करती थीं। देहातों के वैसे मंचन मूलतः अव्यावसायिक हुआ करते थे।

अभ्यास

1. बिहार में नाट्य कला के विकास में प्राथमिक महत्त्वपूर्ण योगदान किसका रहा है?
2. चतुर्भुज के नाटक के क्षेत्र में योगदान का महत्त्व बताइए।
3. पटना इप्टा की स्थापना किन लोगों ने की थी?
4. पृथ्वीराज कपूर कौन थे? अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त कर उनका एक संक्षिप्त परिचय लिखें।
5. बिहार के देहातों मे किस बिहारी नाटककार के नाटक सबसे अधिक लोकप्रिय हुए थे?
6. बिहार के किन्हीं तीन महत्त्वपूर्ण नाटक लेखकों तथा उनके नाटकों के नाम बताइए।
7. बिहार के नाटक के विकास में केशवराम भट्ट के योगदान का परिचय दीजिए।
8. आरा के किस नाटककार ने 'मनोरंजन नाटक मंडली' की स्थापना की थी और किस ईस्वी सन् में किस नाटक का मंचन किया था?
9. सतीश आनन्द और परवेज अख्तर की विशेषताओं का परिचय दीजिए।